NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ

(Indian Sociological Traditions)

B.S.O.E.-142

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Shalini Singh*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ

(Indian Sociological Traditions)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं का इतिहास एवं विकास
(History and Development of Indian Sociological Traditions)

1. भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं पर मुख्य प्रभाव 1
(Major Influences on Indian Sociological Traditions)

2. भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं की प्रमुख विचारधाराएँ 17
(Major Schools of Indian Sociological Traditions)

भारत में समाजशास्त्री-1 (Sociologists in India-1)

3. राधाकमल मुकर्जी 27
(Radhakamal Mukerji)

4. जी.एस. घुर्ये (गोविन्द सदाशिव घुर्ये) 41
(G.S. Ghurye (Govind Sadashiv Ghurye))

5. धूर्जटी प्रसाद मुकर्जी (डी.पी. मुकर्जी) 53
(Dhurjati Prasad Mukerji)

6. एन.के. बोस (निर्मल कुमार बोस) 64
(N.K. Bose)

7. वेरियर एल्विन (Verrier Elwin) 72

भारत में समाजशास्त्री-2 (Sociologists in India-2)

8. इरावती कर्वे (Irawati Karve) 83

9. ए.आर. देसाई (A.R. Desai) 95

10. एम.एन. श्रीनिवास (M.N. Srinivas) 111

11. रामकृष्ण मुखर्जी (Ramkrishna Mukherjee) 126

12. लीला दुबे (Leela Dubey) 136

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय समाजशास्त्रीय परम्पराएँ
(Indian Sociological Traditions)

B.S.O.E.-142

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. रामकृष्ण मुखर्जी को बंगाल के छः गाँव के अध्ययन के मुख्य जाँच परिणाम पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-128, 'ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज'

प्रश्न 2. संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण पर एम.एन. श्रीनिवास की समालोचना पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-112, 'संरचनात्मक प्रकार्यवाद'

प्रश्न 3. भारत में पूँजीवादी परिवर्तन में राज्य की भूमिका पर ए.आर. देसाई के दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-97, 'भारत में पूंजीवादी परिवर्तन में राज्य की भूमिका', पृष्ठ-109, 'प्रश्न 3

प्रश्न 4. विनय कुमार सरकार का भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन में योगदान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'विनय कुमार सरकार'

प्रश्न 5. बम्बई विचारधारा का भारतीय समाजशास्त्र में प्रमुख योगदान क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-18, 'बम्बई विचारधारा'

प्रश्न 6. शहरी सामाजिक समस्याओं पर राधाकमल मुकर्जी के दृष्टिकोण को उजागर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'परिचय', पृष्ठ-30, 'शहरी सामाजिक समस्याओं के लिए सुधारवादी दृष्टिकोण', पृष्ठ-32, प्रश्न 3

प्रश्न 7. महिला अध्ययन पर लीला दुबे के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-138, 'महिलाएँ और नातेदारी', पृष्ठ-142, प्रश्न 2

प्रश्न 8. भारतीय समाज में परंपरा की भूमिका पर डी.पी. मुकर्जी का दृष्टिकोण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-54, 'भारतीय समाज में परंपरा की भूमिका', पृष्ठ-59, प्रश्न 3

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारतीय समाजशास्त्रीय परम्पराएँ
(Indian Sociological Traditions)

B.S.O.E.-142

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. आनन्द कुमारस्वामी के भारत में समाजशस्त्रीय विचारधारा में योगदान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'आनन्द कुमार स्वामी'

प्रश्न 2. समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र के बीच सम्बन्ध को विस्तार से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-5-6, 'भारत में समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र का उदय'

प्रश्न 3. सामाजिक पारिस्थितिकी की समझ पर राधाकमल मुकर्जी के विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-29, 'सामाजिक पारिस्थितिकी'

प्रश्न 4. घुर्ये की जाति सम्बन्धी अवधारणा पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-42, 'भारत में जाति की नई भूमिकाएँ'

प्रश्न 5. जनजातीय लोगों की सांस्कृतिक स्वायत्तता पर एल्विन के दृष्टिकोण पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-73, 'जनजातीय लोगों की सांस्कृतिक स्वायत्तता'

प्रश्न 6. भारतीय राष्ट्रवाद पर ए.आर. देसाई के विचार विस्तार से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-96, 'भारतीय राष्ट्रवाद'

प्रश्न 7. एम.एन. श्रीनिवास की रैडकिल्फ-ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की समालोचना प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-116, 'रैडक्लिफ-ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की समालोचना'

प्रश्न 8. रामकृष्ण मुखर्जी द्वारा अध्ययन किए गए छः गाँवों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की निकृष्ट दशा हेतु आर्थिक प्राधार उत्तरदायी है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-128, 'ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ
(Indian Sociological Traditions)

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं का इतिहास एवं विकास
(History and Development of Indian Sociological Traditions)

भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं पर मुख्य प्रभाव
(Mojar Influences on Indian Sociological Traditions)

1

परिचय

भारत में समाजशास्त्र का विकास प्राचीन ग्रन्थों में पाया जाता है। अंग्रेजों ने भी इस बात को समझा कि यदि भारत पर राज करना है, तो यहाँ की प्राचीन सामाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति को समझना होगा। उनका मानना था कि यदि भारतीयों पर उनके कानूनों और रीति-रिवाजों के अनुसार शासन किया जाएगा, तो भारत में शांति एवं सौहार्द बना रहेगा।

उनकी इस विचारधारा के कारण भारत में समाजशास्त्र का प्रारंभिक विकास हुआ। भारतीय समुदाय के ऊपर अंग्रेजी तौर-तरीकों, मनन-चिंतन, रहन-सहन का प्रभाव भी पड़ा। भारतीय समाज में अनेक धार्मिक-सामाजिक आंदोलन समाज की कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर करने के लिए किये गये। स्वाधीनता आंदोलनों में भाग लेने वाले नेताओं एवं समाज सुधारकों का प्रभाव भारतीय समाज एवं सस्कृति पर देखा जा सकता है। इसी सामाजिक पृष्ठभूमि में भारत में समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृशास्त्र का विकास हुआ।

अध्याय का विहंगावलोकन

भारत में समाजशास्त्रीय चिंतन की सामाजिक पृष्ठभूमि

भारतवर्ष का इतिहास बहुत लंबा है। भारत की सांस्कृतिक विरासत में अनेक भाषाओं के धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथ हैं। ये भाषाएँ हैं–संस्कृत, प्राकृत और पाली। इसके अतिरिक्त मध्ययुग में अवधी, बृज, मैथिली, बंगला, असमी, मराठी, कन्नड़, तेलुगु तथा मलयालम आदि प्रादेशिक भाषाओं में भक्ति साहित्य की रचना की गयी थी।

अंग्रेजी राज से पूर्व सामाजिक विचारधारा

भारतीय दर्शन में योग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदांत और मीमांसा नामक छह विचारधाराओं का उल्लेख है। ये छह विचारधाराएँ भारतीय चिंतन का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन में तेरह उपनिषद हैं, जिनमें मनुष्य के संपूर्ण जीवन तथा मानव जीवन के लक्ष्य का दार्शनिक चित्रण है। भारतीय संस्कृति में जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म की दार्शनिक कृतियाँ भी हैं। इन सभी विचारधाराओं का उद्देश्य मानव जीवन का विकास एवं इसका वर्णन है। इनमें से अधिकांश विचारधाराएँ मोक्ष अर्थात जीवन-मरण के बंधन से मुक्त होने के लक्ष्य से संबंधित हैं। भारतीय समाज समय के अनुसार बदलता रहा है। प्राचीन भारत की सामाजिक विचारधारा एक विस्तृत नृजातीय समाज की अभिव्यक्ति थी। सूफी संप्रदाय का उदय इस्लामी परंपरा के कारण हुआ। इस संप्रदाय ने उत्तर भारत के लोगों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। हिन्दू और मुस्लिम विचारधारा के समन्वय से सिख धर्म का उदय हुआ। भारतीय समाज में विचारों की स्वतंत्रता रही है। किसी वर्ग विशेष पर मान्यताओं एवं विश्वासों के कारण अत्याचार नहीं किया गया था। इसी कारण भारतीय समाज में सहिष्णुता की भावना पाई जाती है। भारत में धर्म आम जनता तथा ग्रामीण संघों में पोषित हुआ और दर्शन की विचारधाराएँ ग्राम एवं शहरी लोगों में ही पनपीं।

अंग्रेजी राज का प्रभाव

अंग्रेजों का भारत में आना एक ऐसी अप्रत्याशित घटना थी, जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर कई दशकों तक रहा। प्राचीन भारतीय परंपराओं को नयी सामाजिक और आर्थिक शक्तियों ने परिवर्तित किया। संस्कृत एवं फारसी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी को राजभाषा घोषित किया गया। भारत के प्राचीन ग्रामीण हस्तकला उद्योग नष्ट हो गये, क्योंकि मैनचेस्टर, लंकाशायर, शेफील्ड और लंदन से आयी मशीनों से बने कपड़े एवं वस्तुएँ बाजार में छा गयीं। भारतीय गाँव आत्मनिर्भर नहीं बन सके।

अंग्रेजों ने भारत में कुछ सकारात्मक बदलाव भी किए, जैसे– भारत में रेल, डाक व तार संपर्क व्यवस्था को सरल बनाकर अनेक

www.neerajbooks.com

परिवर्तन किये। भारत के अनेक भागों में प्रशासनिक एवं न्यायिक सेवाओं की व्यवस्था की गयी। यह विकास भारत को आधुनिक युग में ले गया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा के विकास के लिए अनेक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय की स्थापना की। भारत की स्वयंसेवी संस्थाओं तथा मिशनरियों ने भी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किये।

मध्य वर्ग का उदय

अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीय समाज में मध्यवर्ग का उदय हुआ। प्राचीन सामंती वर्ग जैसे–राजा, महाराजा, जमींदार आदि का प्रभाव अब कम हो गया था। धार्मिक अनुष्ठानों और पारिवारिक मामलों में जाति महत्त्वपूर्ण है, परंतु व्यवसाय, रोजगार और सामान्य जीवनयापन के अंग में वर्ग का स्थान महत्त्वपूर्ण है। मध्यम वर्ग के लोगों में न केवल आर्थिक समानता होती है, अपितु उनमें सामाजिक-सांस्कृतिक समानता भी पायी जाती है।

सामाजिक-धार्मिक सुधार के लिए अन्य आंदोलन

भारतीय समाज के मध्यम वर्ग ने उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में समाज में सुधार एवं आधुनिकीकरण के लिए प्रयास प्रारंभ किये। इन प्रयासों में सामाजिक तथा धार्मिक दोनों क्षेत्रों में आंदोलन चलाए गए। उन्नीसवीं शताब्दी के कुछ सुधारवादी एवं पुनरुत्थानवादी आंदोलनों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

सुधारवादी आंदोलन

बंगाल के राजा राममोहन राय उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख समाज सुधारकों में से एक थे। उन्होंने लोगों से सती प्रथा, बाल हत्या जैसे अंधविश्वासों को त्यागने का आग्रह किया। उनका कहना था कि यदि हम इन बुराइयों को त्याग दें तो प्रगति कर सकते हैं। उन्होंने ईसाई धर्म एवं वेदों की शिक्षाओं को एक साथ मिलाकर एक नये धर्म का प्रचार किया। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। यह एक आध्यात्मिक मंच था। बंगाल के शहरी एवं सुशिक्षित वर्ग ही राजा राममोहन राय से प्रभावित थे। महादेव गोविंद रानाडे जो एक न्यायाधीश थे, उन्होंने महाराष्ट्र में मुंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की, जो बंगाल के ब्रह्म समाज से प्रभावित था। इन दोनों आंदोलनों के प्रति समाज की प्रतिक्रियाएँ भिन्न-भिन्न थीं। ब्रह्म समाज का राधाकांत देवी के नेतृत्व वाले रूढ़िवादी हिंदुओं ने विरोध किया, क्योंकि ब्रह्म समाज पाश्चात्य उदारवादी दृष्टिकोण पर आधारित था। रूढ़िवादी परंपराओं एवं आधुनिकता के मध्य संघर्ष उत्पन्न हो गया। दूसरी तरफ प्रार्थना समाज के सामने यह परिस्थिति उत्पन्न नहीं हुई, क्योंकि इसकी उदारवादी प्रवृत्तियों ने परंपरा एवं आधुनिकता के मध्य तनाव नहीं उभरने दिया। प्रार्थना समाज के सदस्यों ने ब्रह्म समाज की तरह गैर-परंपरावादी रहन-सहन नहीं अपनाया, इसलिए समाज में इसका अधिक विरोध नहीं किया गया जितना कि ब्रह्म समाज का।

पुनर्जागरण आंदोलन

पुनर्जागरण आंदोलनों के अंतर्गत दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे हिन्दू धर्म की हानिकारक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों, जातिवाद एवं अंधविश्वासों को छोड़कर वेदों की प्राचीन सभ्यता एवं पवित्रता को अपनाएँ। आर्य समाज ने परंपरा और आधुनिकता पर आधारित शिक्षा का समर्थन किया। उत्तर भारत में दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेजों (डी.ए.वी.) ने व्यापक स्तर पर शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिसके दो प्रमुख उद्देश्य थे–

(1) समाज में कमजोर वर्गों के प्रति शिक्षित भारतवासियों को जिम्मेदारी का अहसास कराना तथा देश की गरीबी और सामाजिक पिछड़ेपन को दूर करना।

(2) पश्चिमी देशों में भारतीय वेदों का प्रचार-प्रसार करना। पहले उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विवेकानन्द ने शहरी, ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में स्कूल और छात्रावास की स्थापना की, जिससे सामान्य लोगों को शिक्षा और रोजगार मिल सके। इसके अतिरिक्त विदेशों में आध्यात्मिक जागरण के उद्देश्य से भिन्न-भिन्न देशों में अद्वैत केंद्रों को स्थापित किया गया।

अन्य आंदोलन

भारत में हुए सुधारवादी एवं पुनर्जागरण आंदोलनों ने जिस प्रकार सामाजिक सुधार की लहर चलायी और समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता से जुड़ी बौद्धिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला, उसी प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अन्य आंदोलनों ने भी लोगों के बौद्धिक क्रियाकलापों को प्रभावित किया। ये आंदोलन पर्यावरण ह्रास, विकास प्रक्रिया, निर्वनीकरण, विस्थापन और भारत में महिला-पुरुष की जनसंख्या के अनुपात में विषमता जैसे–विषयों से जुड़े थे। इन विषयों पर तत्पश्चात अनेक विद्वानों ने अध्ययन किये।

भारत में स्वाधीनता और स्वाधीनता उत्तर राजनैतिक आदोलन

भारत में स्वाधीनता के लिए राजनैतिक आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में प्रारंभ हुए। आक्टेवियस ह्यूम ने 1885 में राजनैतिक मंच के रूप में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।

स्वाधीनता आंदोलन की सामाजिक पृष्ठभूमि

1885-1917 तक कांग्रेस का स्वरूप मध्यम वर्गीय था और इसके ज्यादातर सदस्य शिक्षित और शहरी परिवेश से संबंध रखते थे। गाँधी जी के प्रवेश के साथ ही कांग्रेस एक जनसाधारण की राजनैतिक पार्टी के रूप में परिवर्तित हो गयी। उस समय कांग्रेस के प्राथमिक सदस्यता प्राप्त करने वाले लोग व्यवसायी, किसान, शिल्पकार और औद्योगिक मजदूर थे। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कांग्रेस के नेता और उनके अनुयायियों को राजद्रोही घोषित किया गया तथा कारावास में डाल दिया गया। बहुत से लोगों को आतंकवादी घोषित करके फाँसी भी दी गयी। लेकिन भारतीय स्वाधीनता संग्राम की विशेषता अहिंसा थी।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

धार्मिक और राजनैतिक आंदोलनों का संपूरक स्वरूप

राष्ट्रीय कांग्रेस और दूसरी राजनैतिक पार्टियाँ देश की राजनैतिक गतिविधियों में संलग्न थीं और धार्मिक आंदोलन अप्रत्यक्ष रूप से इसमें अपना सहयोग दे रहे थे। इन आंदोलनों ने राजनैतिक जाग्रति तथा लोगों में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। इसलिए ये दोनों राजनैतिक और धार्मिक आंदोलन एक-दूसरे के पूरक थे।

महिलाओं, कृषकों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों से जुड़े राजनीतिक आंदोलन

सामाजिक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से प्रारंभ किये गये अभियानों ने धीरे-धीरे राजनीतिक आंदोलनों का रूप ले लिया। राजनीतिक ढाँचे और गतिविधियों से असन्तुष्ट जन सामान्य की बढ़ती हुई अपेक्षाओं और उम्मीदों से संबंधित कई आंदोलनों का उल्लेख मिलता है। ऐसे कुछ आंदोलनों पर हुए अध्ययनों के उदाहरण हैं–कोठारी, 1960, बेली, 1962 और देसाई, 1965. इस प्रकार के आंदोलनों का मुखर्जी, अमन और राव जैसे समाजशास्त्रियों ने सैद्धान्तिक एवं विवरणात्मक स्तर पर अध्ययन किया है।

1946 से 1951 के बीच हुआ तेलंगाना कृषक आंदोलन राजनीतिक आंदोलन का ही उदाहरण है। कम्युनिस्ट पार्टी ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया था। 1960 के दशक में हुए नक्सलबाड़ी आंदोलन का भी समर्थन किया जो आज तक जारी है। तेलंगाना तथा नक्सलबाड़ी आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य कृषि से संबंधित सामाजिक संबंधों में परिवर्तन था। भारतीय समाज में उपेक्षित, प्रताड़ित वर्ग, अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के संघर्षों, विरोध अभियानों एवं आंदोलनों के बहुत से उदाहरण हैं। ओमवेट ने 2001 में दलित आंदोलन का अध्ययन किया तथा सिन्हा और सिंह ने 2002 में जनजातीय आंदोलनों का विश्लेषण किया।

भारत में समाजशास्त्रीय चिंतन की वैचारिक पृष्ठभूमि

भारत के इतिहास में एक प्रतिष्ठित साहित्यिक परंपरा परिलक्षित होती थी। संस्कृत भाषा का ज्ञान विशिष्ट वर्ग की विशेषता थी। लेकिन भारत में भक्ति काल के दौरान क्षेत्रीय भाषाओं में उच्चस्तरीय साहित्य विकसित हुआ। जिन भक्तों, कवियों ने क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक रचना करने की प्रेरणा दी, वे या तो स्वयं रचनाकार थे या फिर उनके उपदेशों ने साहित्यिक रचनाओं को प्रभावित किया। कुछ कवियों एवं रचनाकारों के नाम इस प्रकार हैं–तुलसीदास, सूरदास, कबीर, शंकरदेव, चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, नरसी मेहता, नायनार और आलवार संत आदि।

ये सभी भक्तजन भारत के अधिकांश भाग में सम्माननीय थे। लेकिन भारतीय समाज का विशिष्ट वर्ग संस्कृत को ही आदर्श साहित्यिक रूप मानता रहा। साहित्य की प्रतिष्ठा संस्कृत की रचनाओं के साथ जुड़ी हुई थी। रविन्द्रनाथ टैगोर को भी इस विशिष्ट वर्ग की आलोचना का सामना करना पड़ा था क्योंकि यह वर्ग संस्कृत भाषा को बांग्ला भाषा से श्रेष्ठ मानता है। लेकिन ये सब धारणाएँ बदल गयीं, जब भारत में अंग्रेजी भाषा शिक्षा का माध्यम बन गई। भारतीय विशिष्ट वर्ग ने आसानी से अंग्रेजी को आंशिक रूप से अपना लिया। आधुनिक शिक्षा प्राप्त किये हुए आधुनिक विशिष्टवर्ग का विज्ञान और तकनीकी की तुलना में साहित्यिक और मानववादी परम्पराओं के प्रति अधिक रुझान था।

परंपरा और आधुनिकता के बीच द्विविधा

परंपरा और आधुनिकता के बीच द्विविधा की स्थिति ने भारतीय बुद्धिजीवियों को असमंजस में डाल दिया था। परंपरा का तात्पर्य है–पुराने रीति-रिवाजों, नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों को महत्व देना तथा आधुनिकता का अर्थ है–तर्क, संगति, स्वाधीनता तथा समानता जैसे पश्चिमी आदर्शों को महत्त्व देना। आधुनिकता और परंपरा एक दूसरे के विरोधी तो नहीं हैं। आनंद कुमार स्वामी, जो भारतीय कला के संग्रहालयाध्यक्ष और सामाजिक विचारक हैं, ने आधुनिकता और परंपरा के इन पारंपरिक अर्थों को स्वीकार नहीं किया है। उनके अनुसार परंपरा का अर्थ उन आधारभूत मूल्यों से है, जो पूर्व और पश्चिम दोनों के लिए सामान्य हैं। समाजशास्त्री विनय कुमार सरकार का विचार इसके बिल्कुल विपरीत था। उनके मतानुसार भारत में परंपरा की जड़ धर्म और आध्यात्मिकता में है। विनय कुमार सरकार ने भारत की धर्मनिरपेक्षता को दर्शाने का प्रयास किया। उन्होंने परंपरा को पूर्णरूप से अस्वीकार नहीं किया है। भारतीय संस्कृति की धर्मनिरपेक्षता को वे मानवीय प्रगति के लिए उपयोग करना चाहते हैं।

विनय कुमार सरकार

विनय कुमार सरकार एक तर्कवादी थे। वे इस बात का विरोध करते थे कि पश्चिमी दुनिया भौतिकवादी है और पूर्वी संस्कृति अध्यात्मवादी है। सरकार का मानना है कि भारतीय समाज में भौतिकवादिता और धर्मनिरपेक्षता दोनों ही विशेषताएँ हैं। वे भारत की संस्कृति को रहस्यवादी और पारलौकिक नहीं मानते थे। भारत के प्राचीन सामंतवादी कृषि-प्रधान इतिहास से अधिक पूँजीवादी वर्तमान परिवर्तन को सरकार ने अपनी स्वीकृति दी है। पूँजीवादी या बुर्जुआ संस्कृति उपनिवेशिक शासनकाल की प्रमुख शक्ति थी। भारत के तर्कसंगत आधार की खोज में विनय कुमार सरकार के विचारों पर मैक्स वेबर का प्रभाव था। सरकार ने पूँजीवाद के राजनैतिक पक्ष को उजागर किया, जबकि वेबर ने पूँजीवाद का समाजशास्त्र विकसित किया और उसने नौकरशाही का भी उल्लेख किया।

विनय कुमार सरकार स्वयं तो नास्तिक थे, परंतु उन्होंने भारत की धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं को हमेशा अपना समर्थन दिया। सरकार के अनुसार भारत के सभी धर्मनिरपेक्ष थे। विनय कुमार सरकार ने धार्मिक पुनर्जागरण का विरोध किया क्योंकि वे चाहते थे कि भारत का शिक्षित वर्ग अपने तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष अतीत को पुनर्जीवित करके शहरी एवं औद्योगिक समाज की चुनौतियों का सामना कर सके।

पश्चिमी देशों का बुर्जुआ वर्ग अपने सामंती अतीत को त्याग चुका था। औद्योगिक क्रांति के कारण चर्च व उसके रहस्यवाद का प्रभाव समाज से समाप्त होने लगा था। यूरोप के औद्योगिक समाज

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

में व्यक्तिवाद को प्रमुखता प्रदान की गयी। विनय कुमार सरकार यूरोप के प्रसिद्ध विचारकों हाब्स और मैकियावेली से प्रभावित थे। मैकियावेली ने चौदहवीं शताब्दी में राजनैतिक दर्शन लिखा था। उसके अनुसार पूँजीवादी व्यक्ति अधिक उद्यमी और आत्मविश्वास से भरपूर था। मैकियावेली ने राजनैतिक शासकों को अवसर का पूरा लाभ उठाने तथा अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

थॉमस हाब्स जो एक राजनैतिक दार्शनिक थे, ने ग्यारहवीं शताब्दी में सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत उल्लेख किया। मैकियावेली ने जिस आत्मावलंबी व्यक्ति का वर्णन किया था, वह अब विकसित पूँजीवादी व्यवस्था के लिये उपयुक्त नहीं था क्योंकि पूँजीवाद में अधिक व्यवस्था और संतुलन आवश्यक था। इसी कारण से व्यक्ति को अपने स्वार्थी लक्ष्यों को छोड़कर एक सामाजिक अनुबंध में बंधकर समाज के नियमों और कानूनों के अनुसार रहना आवश्यक था। विनय कुमार सरकार का मत था कि भारतीयों को अपनी रहस्यवादी प्रवृत्ति का त्याग करके पूँजीवादी व्यवस्था के लिए एक नवीन सामाजिक परिवेश का विकास करना चाहिए। सरकार ने कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं–'पॉजिटिव बैकग्राउंड ऑफ हिन्दू सोसाइटी', 'पोलिटिकल इंस्टीट्यूशंस एंड थ्योरीज़ ऑफ हिंदूज' आदि। विनय कुमार सरकार कलकत्ता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के शिक्षक थे।

आनन्द कुमार स्वामी

प्रारंभिक भारतीय सामाजिक विचारक आनन्द कुमार स्वामी ने भारतीय समाजशास्त्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आनन्द कुमार स्वामी एक आदर्शवादी विचारक थे। वे ईश्वर तथा अच्छे कर्मों में विश्वास रखते थे। विनय कुमार सरकार और आनन्द कुमार स्वामी के विचार इस संदर्भ में विपरीत थे। इस शताब्दी के दो या तीन दशकों को पुनर्जागरण काल कहा जाता है। भारत के कुछ गणमान्य एवं महान विचारक, जैसे–विवेकानंद, श्री अरविंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि भारत की पहचान एक आदर्शवादी देश के रूप में बनाना चाहते थे। इन लोगों का मानना था कि भारत की आध्यात्मिकता ही इसको महान बनाती है। उनके अनुसार यही आध्यात्मिकता भारत को दरिद्रता और पिछड़ेपन से मुक्त करा सकती है। भारत के साथ-साथ पश्चिमी दुनिया को भी युद्ध, हिंसा और भौतिक लोभ से यह आध्यात्मिकता राहत पहुँचा सकती है।

वास्तुकला और स्थापत्य कला के विकास के लिए आनन्द कुमार स्वामी ने व्यापक रूप से शोध किया। भारतीय कला उनके लिए अपने असंख्य रूपों में सजावट और सौंदर्य की वस्तु थी। उनके अनुसार भारतीय कला के द्वारा भारत की उस मानसिकता को समझा एवं जाना जा सकता है, जिसमें सृष्टि की एकात्मकता या विविधता में एकता का संदेश हो।

मानवजाति के आदर्शों और मूल्यों को भारतीय कला ने मूर्त रूप दिया। भारत के अशिक्षित लोगों के बीच कला दृश्य माध्यम बनी। कला के माध्यम से महाकाव्यों, पुराणों और दंतकथाओं को शिलाओं, मिट्टी और संगमरमर पर जनसाधारण के लिए चित्रित किया गया। भारतीय कला ने भारत के धार्मिक मूल्यों को अपना कर सभी प्रकार की अभिव्यक्तियों में भारत की एकरूपता को भी प्रकट किया। भारतीय कला के दर्शन की व्याख्या करते हुए आनन्द कुमार स्वामी ने कई पुस्तकें लिखीं। अपनी संस्कृति की रचनाओं के द्वारा ही भारत पुराने समय में पश्चिमी देशों में पहचाना जाता था। चार सहस्त्राब्दियों में विकसित हुई भारतीय कला की छवि पश्चिमी देशों में अस्पष्ट एवं धुँधली थी। कुमार स्वामी भारतीय मूर्ति कला को भारतीय आदर्शों का वास्तविक खजाना मानते थे। उनके अनुसार भगवान शिव की नृत्य करती हुई मूर्ति (शिव नटराज) नश्वरता के बंधनों के साथ ही आत्मा को सांसारिक बंधनों से मुक्त करती है। भारतीय और यूरोपीय गोथिक कला को कुमार स्वामी समान मानते थे। भारतीय कला का विस्तृत दर्शन कुमार स्वामी ने ही सर्वप्रथम प्रस्तुत किया था। परंपरा और आधुनिकता के मध्य अंतर का कुमार स्वामी ने उल्लेख किया। पूर्व, मध्यपूर्व और पश्चिम के देशों में सामूहिक जीवन और गुणात्मक उपलब्धियों की विशेषता पायी जाती थी। लेकिन परंपरा के इस युग को विश्वव्यापी औद्योगिक क्रांति ने परिवर्तित कर दिया। नये युग में मनुष्य प्रतिस्पर्धा के कारण स्वार्थी एवं भौतिकवादी बन गया। कुमार स्वामी को इस बात का दुख था कि आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीकी का दुरुपयोग हुआ। इस नई स्थिति के कारण मनुष्य आक्रामक और स्वार्थी बन गया। युद्ध और हिंसा के द्वारा विभिन्न राष्ट्र अपना प्रभुत्व एक-दूसरे पर स्थापित करने का प्रयत्न करने लगे।

भारत के आदर्शों एवं मूल्यों को पश्चिम की तुलना में श्रेष्ठ साबित करने का कुमार स्वामी ने कभी प्रयास नहीं किया। यूरोपीय, चीनी और अरबी ग्रन्थों के रहस्यवाद की समानता पर उन्होंने विस्तार से वर्णन किया। उनके अनुसार पारंपरिक आध्यात्मिकता और रहस्यवाद को पाश्चात्य देशों की भौतिक उपलब्धियों ने पीछे छोड़ दिया। भारत की आध्यात्मिकता पश्चिम में पुनः नवजीवन प्रदान करने में सहायक हो सकती थी। भारत का प्रतिनिधित्व पूरे एशिया में विशेष स्थान रखता था। चीनी सभ्यता को बौद्ध धर्म ने महानता प्रदान की। भारतीय संस्कृति ने ही जापान, थाईलैंड, श्रीलंका और कंबोडिया जैसे एशियाई देशों का मार्गदर्शन किया था। आनन्द कुमार स्वामी ने लिखा कि भविष्य के चुने हुए लोग पूरे विश्व के अभिजात वर्ग के होंगे न कि किसी एक राष्ट्र या जाति के। उन लोगों में यूरोप की क्रियात्मक शक्ति तथा एशिया की वैचारिक स्वच्छता का समन्वय होगा। वे ये भी चाहते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए संघर्षरत भारत के राष्ट्रवादी नेता व्यापक दृष्टिकोण को अपनाएँ। कुमार स्वामी यह भी चाहते थे कि भारत के युवा स्वतंत्र भारत के साथ-साथ बेहतर विश्व के लिए भी प्रयत्न करें। यह विश्व तनाव एवं संघर्ष से रहित हो। भारतीय महिलाओं को उन्होंने सुझाव दिया कि महिलाओं को भारतीय

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com